Chandamama, August '51

Photo by D. L. Chitlam

गोदी का बच्चा

ग्राहक बनिए !

बहुत से लोग शिकायत करते हैं कि उन्हें एजन्टों से चन्दामामा की कापियाँ नियमित रूप से नहीं मिलतीं। उनके लिए हमारा सुझाव है कि वे तुरन्त चन्दामामा के वार्षिक या द्विवार्षिक ग्राहक बन जाएँ। तब उन्हें चन्दामामा की प्रतियाँ नियमित रूप से मिला करेंगी। आज ही लिखिए।

वार्षिक ४॥) द्विवार्षिक ८)

व्यवस्थापक: ग्राहक-विभाग चन्दामामा (हिन्दी) :: १०, आचारप्पन स्ट्रीट, मद्रास-१.

कसीदा काढ़ने की मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के बेल-बूटे फूल-पत्ती आदि काढ़ने वाली जिसपर ४ सुइयों वाली मशीन का मूल्य Rs. 6/- डाक खर्च Rs. 1/4/- कसीदा कारी की अनेकों डिजाइन की पुस्तक का मूल्य Rs. 2/8/- डाक खर्च As. 8/- अलग।

घर का सिनेमा (छोटी मशीन)

इस छोटे सिनेमा यन्त्र द्वारा आप तरह तरह की रंगीन तसवीरें देख कर घर बैठे बड़े सिनेमा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सिनेमा यन्त्र तसवीरों सहित मूल्य Rs. 5/- डाक खर्च Rs. 1/8/- अलग। पत्र व्यवहार अंग्रेजी में करें।

पता: GLOBE TRADERS (C.M.M.)
ALIGARH, U.P.

जेबी प्रेस (छापाखाना)

जिसमें अंगरेजी, हिन्दी के समस्त अक्षर, स्याही मुहर बनाने के तरीके, पैड इत्यादि हैं। जिस नाम को छापना चाहो पांच मिनिट में तैयार हो जायगा मू. ६) डा. खर्च १।) अलग।

इलेक्ट्रिक गाईड।

इस पुस्तक की सहायता से बिना बिजली का रेडियो केवल १५ रु. में तैयार कर सकते हैं तथा बिजली के काम की पूरी जानकारी प्राप्त कर एक कुशल इंजिनियर बन सकते हैं। मू. २॥) डा. खर्च ॥।) पत्र व्यवहार अंग्रेजी में करें।

पता: SANSAR TRADING CO.
(C.M.M.) P. O. 21, ALIGARH (U.P.)

लाभदायक, उपयोगी और नवीन पुस्तकें

बाल उपयोगी पुस्तकें		स्त्री उपयोगी पुस्तकें		अन्य उपयोगी पुस्तकें	
फोटोग्राफी शिक्षा	२)	सौन्दर्य और शृङ्गार	३)	संगीत सौरभ	२)
चित्रकारी शिक्षा	२॥)	बाल रोग चिकित्सा	१॥)	गोरे खूबसूरत होने के उपाय	२)
साबुन शिक्षा	२)	नारी धर्म शिक्षा	४)	फिल्मी गायन ५२८ गाने	३)
सोने की खान	२॥)	सतियों की कहानियां	२॥)	बिजली की बैटरियां बनाना	३)
श्री सुभाषचन्द्रबोस	१)	सिलाई कढ़ाई शिक्षा	३)	सिनेमा विज्ञान	२॥)
ब्रह्मचर्य साधन	१॥)	भाभी का प्यार	२)	हस्तरेखा विज्ञान	३)
बाल महाभारत	२।)	पाक विज्ञान	४)	मोटर ड्राइवरी शिक्षा	४)
खजाना रोजगार	२॥)			घर का वैद्य	३)
घड़ी साजी	१॥)			रेडियो बनाने के तरीके	२)
फिल्मी जंक्शन	२)			अकबर बीरबल विनोद	३)

नोट: प्रत्येक आर्डर पर डाक खर्च तथा पैकिंग अलहदा लगेगा। पुस्तकें वी.पी. द्वारा भेजी जाती हैं।

पता:— नवशक्ती कार्यालय, (C. H. H.) पोस्ट नं १३ अलीगढ़ यु० पी०

कैलकेमिको के
MARGO
Neem TOOTH
मार्गो सोप
(नीमका सुगंधित साबुन)
नीम टूथ पेष्ट
भृंगल
खरीदते समय असली देखकर लीजिये
दि

[मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर चित्र और कई प्रकार के तमाशे हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास-१

De Chane's
MEDICINE CHEST
ठीक समय पर खतरनाक रोगों को रोकने वाली ८ दवाओं की यह पेटी हर एक घर में रहने लायक है। मिलावट से इस्तेमाल कर सकते हैं। इनका उपयोग करने में गलती होने पर भी परवाह नहीं।
THE MEDICINE CHEST
eight, simple, effective
Remedies...
Used widely by District Councils and Charitable Institutions throughout India Burma and Ceylon.
PRICES
J. & J. De Chane
RESIDENCY ROAD, HYDERABAD-Dn.

चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र

संचालक : चक्रपाणी

जब कंस को मालूम हुआ कि कन्हैया ने केशी को भी बड़ी आसानी से मार डाला तो वह बड़ी चिन्ता में पड़ गया। आखिर उसने कुछ सोच कर 'धनुर्याग' नामक महायज्ञ की तैयारियाँ कीं। कृष्ण और बलराम से मल्लयुद्ध करने के लिए उसने दो मशहूर पहलवानों को बुला रखा। 'कुवलय-पीडन' नामक दुष्ट हाथी को भी उसने सिद्ध कराया। फिर उसने अपने विश्वास-पात्र अक्रूर को बुलाकर कहा—'तुरंत जाकर कृष्ण और बलराम को किसी न किसी उपाय से यहाँ ले आओ।' अब बेचारा अक्रूर बड़ी मुश्किल में पड़ गया। उसका हृदय बहुत ही कोमल था। वह कृष्ण को बहुत चाहता भी था। फिर वह जान-बूझ कर कैसे उनको मौत के मुँह में बुला लाए? इधर कंस की आज्ञा टाली भी नहीं जा सकती थी। दूसरे दिन अक्रूर कंस के दिए हुए रथ पर चढ़ कर वृन्दावन की ओर चला। जाते जाते उसने सोचा—'मुझे भगवान के दर्शन होने वाले हैं। फिर मैं व्यर्थ चिन्ता क्यों करूँ? कृष्ण को बुला लाना भर ही मेरा काम है। उसके आगे जो कुछ होगा उसकी ज़िम्मेवारी मेरे ऊपर नहीं।' अक्रूर को देखते ही भगवान कृष्ण ने उसका खूब सत्कार किया। अक्रूर ने कंस की सारी चालबाजी कृष्ण को बता दी। भगवान बड़े चाव से उसकी बातें सुनने लगे जैसे उन्हें कुछ मालूम न हो।

वर्ष 2 — अंक 12

अगस्त — 1951

एक प्रति 0-6-0

वार्षिक 4-8-0

समझदार हाथी

एक गरीबिन निज लड़के को
गोद लिए जंगल जाती।
और बेचने को बस्ती में
लकड़ी रोज़ बीन लाती।

किसी पेड़ की सघन छाँह में
शिशु को नित्य लिटा देती।
स्वयं निकट ही इधर उधर जा
जल्दी लकड़ी चुन लेती।

एक बार वह यों ही शिशु को
सुला एक तरु के नीचे—
तनिक दूर जा लकड़ी चुनती
थी कि सुनी हलचल पीछे।

घबराकर जो मुड़कर देखा—
हाथी एक चला आता
उस बच्चे की ओर! हाय! अब
उसको कौन बचा पाता?

छिन भर साँस रुकी माता की
पैरों तले भूमि खिसकी।
देख भयङ्कर उस हाथी को
सुध-बुध भूल गयी उसकी।

लेकिन लड़के को क्या पता कि
वह कितने खतरे में है ?
जाग मुसकाया अचरज से
हाथी देख, उठा भौंहें ।

हाथी और निकट हो आया
डर से काँप गई माता ।
उस मासूम, लाड़ले लड़के
से उसका छूटा नाता ?

पाँव उठाया हाथी ने जब
लड़का खूब खिलखिलाया ।
देख विचित्र जीव को उसके
मन में हर्ष लहर आया ।

हाथी पाँव उठा लड़के के
ऊपर से ही लाँघ गया—
जैसे देख अबोध बाल को
मन में आई उपज दया ।

माँ ने दौड़ लाड़ले शिशु को
निज छाती से लगा लिया ।
मन में हाथी को सराह कर
उसने गृह का मार्ग लिया ।

गुर्जर देश में अग्निमित्र नाम का एक राजपुत्र रहता था। सुन्दरता और शील में वह किसी से कम न था। लेकिन उसके राज्य न था। फिर भी उसे विश्वास था कि किसी न किसी दिन वह जरूर राजा बनेगा। इसलिए वह दक्षिण देश की ओर चला गया। राह में उसे अनेक नदियाँ, जङ्गल और पहाड़ मिले। जब तक पैरों में ताकत रहती, तब तक चलता रहता। कुछ मिल जाता तो खा लेता और थक जाने पर किसी पेड़ के तले सो जाता। थकान मिटते ही उठ कर फिर चल देता।

इस तरह बहुत दिनों तक चलता-चलता वह शङ्करगिरि नामक पहाड़ के पास पहुँचा। अन्धेरा हो गया था। इसलिए अग्निमित्र वहीं एक चट्टान की आड में लेट रहा। उसकी आँख झपकी ही थी कि सामने उसे एक सुंदर मंदिर दिखाई दिया। बड़ा ही विचित्र मंदिर था वह। वह ईंट-पत्थर का बना हुआ नहीं था। सारा का सारा मंदिर सोने का था। उसके शिखरों, प्राकारों और मण्डपों पर नवरत्नों से नक्काशी की गई थी। अग्निमित्र चकित होकर देखता रह गया। उसकी आँखें चौंधिया गईं। सबसे अजीब बात तो उसे यह जान पड़ी कि कुछ ही देर पहले जब वह इस राह से आया था तो उसे कहीं कोई मंदिर नहीं दीख पड़ा था। फिर अचानक यह कहाँ से आ खड़ा हुआ? ऐसा लगा कि यह सब जादू का खेल है और दक्षिण देश तो जादू-टोना के लिए मशहूर है ही। वहाँ पर बड़े-बड़े मायावी लोग रहते हैं। नहीं तो यह मंदिर पल भर में कैसे बन जाता!

इस तरह अग्निमित्र अचरज में डूबा हुआ था कि उसको अचानक एक बात सूझ गई।

विजय शर्मा

उसने सोचा—"ज़रा इसको छूकर तो देखूं कि यह मंदिर सच्चा है या जादू का खेल है!" यह सोच कर वह उठ बैठा।

लेकिन यह क्या! उसके उठते ही वह जगमगाता हुआ रत्न-जटित मंदिर, उसके ज्योतिर्मय शिखर और विशाल प्राकार सभी कुछ छू-मंतर हो गए। उसके आगे अन्धकार हो गया। यह देख कर वह एकदम घबरा गया और मुँह बाए खड़ा गया।

कुछ देर खड़े रहने के बाद वह फिर वहीं लेट गया। यह क्या! लेटते ही उसे वह मंदिर और शिखर सब कुछ फिर ज्यों-के-त्यों दिखाई देने लगे। वह फिर उठा तो मंदिर फिर ग़ायब! यह खेल कई बार हुआ।

तब अग्निमित्र को शक होने लगा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा है! तब दोनों हाथों से उसने अपनी आँखें मलीं और शरीर में चिकोटी काटी। जब दर्द हुआ तो निश्चय हो गया कि यह सब सपना नहीं है, यथार्थ है। वह झट उठ बैठा; लेकिन उठते ही फिर वही बात, मंदिर ग़ायब।

उसका सिर चक्कर खाने लगा और हार कर वह फिर लेट गया तो उसकी आँखों के सामने मंदिर चमकने लग गया। उठने से फिर ग़ायब न हो जाए, इसलिए वह लेटे ही लेटे मंदिर की ओर एकटक देखता रहा। इतने में एक चींटी ने उसे काट लिया। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। तुरन्त मंदिर नदारद। अग्निमित्र को शक हुआ कि उसे जिस जीव ने काटा है वह चींटी है या और कुछ। इसलिए वह उस जगह हाथ से टटोल कर देखने लगा। इतने में एक जड़ी उसके हाथ लगी। तुरन्त मंदिर उसको फिर दिखाई देने

लगा। उसे बड़ा अचरज हुआ कि इस बार उसके बैठने पर भी मंदिर दिखाई दे रहा है। उस जड़ी को हाथ में लेकर डरते-डरते उठ खड़ा हुआ। अहा, मंदिर दीखता ही रहा। धीरे धीरे वह मंदिर की ओर कदम बढ़ाने लगा। उसका हृदय बल्लियों उछल रहा था। पास जाकर उसने मंदिर की दीवार को डरते-डरते हाथ से छुआ कि कहीं गायब न हो जाए। लेकिन वह तो सच ही सोने का बना था। उसमें सचमुच ही मणि-मरकत आदि जड़े हुए थे।

अब अभिमित्र की समझ में आया कि उठने पर वह क्यों नहीं दीख पड़ता था। वह सब उस जड़ी की करामात थी। जब वह लेट जाता था, तब उसका शरीर उस जड़ी से सट जाता था और मंदिर उसे दीखने लग जाता था। लेकिन उठ बैठने पर जड़ी उससे दूर पड़ जाती थी। इसलिए मंदिर नहीं दीख पड़ता था। अब जड़ी उसके हाथ में थी। इसलिए वह मंदिर को देख और छू सकता था। यह देख कर अभिमित्र के मन में हुआ कि चल कर देखें; उस मंदिर में क्या-क्या है! इसलिए जड़ी हाथ में लिए वह अन्दर घुसा। अन्दर जाने पर दोनों ओर उसे पांच-पांच सोने के कड़ाह दीख पड़े। ये कड़ाह बहुत ऊँचे थे।

उनके अन्दर झाँकने के लिए अभिमित्र को अँगूठों के बल खड़ा होना पड़ा। पहले कड़ाह में बतख के अण्डे जैसे बड़े-बड़े रत्न भरे थे। दूसरे में मरकत-मणि। तीसरे में हीरे-जवाहर। बाकी कड़ाहों में भी मोती, मूँगे आदि कई बहुमूल्य रत्न भरे थे। दसवें कड़ाह में अशर्फियाँ थीं। यह सब देख कर अभिमित्र का सिर चकराने लगा।

आखिर उसने अपना अँगोछा नीचे बिछा दिया और हरेक कड़ाह में से एक एक मुट्ठी रत्न निकाल, अँगोछे पर रख कर उनकी पोटली बाँधने लगा। पर देखता क्या है कि हरेक कड़ाह का सिर्फ एक एक रत्न ही अँगोछे पर था। बाकी सब न जाने कैसे अपने-अपने कड़ाह में पहुँच गए!

अभिमित्र बुद्धिमान था। इसलिए उसने समझ लिया कि लालच बुरी बला है। वह उस पोटली को लेकर आगे बढ़ चला। गर्भ-गृह में पहुँचने पर उसने देखा कि एक सौ पँखुड़ियों वाले कमल के ऊपर तेजोमई मूर्ति विराजमान है। वह मूर्ति लक्ष्मी देवी की थी। उनके चरणों के निकट मणिमय अक्षरों में लिखा हुआ था 'शतदल-सुन्दरी'।

अभिमित्र ने भक्ति भाव से मूर्ति को प्रणाम किया। परन्तु हाथ जोड़ते समय उसे छड़ी का ख्याल न रहा और वह छूट कर नीचे गिर गई। छड़ी के गिरते ही सब कुछ लापता हो गया। सिर्फ कन्धे पर रखी हुई जवाहरों की पोटली रह गई। उसने बहुत ढूँढा, लेकिन छड़ी फिर न मिली।

आखिर निराश होकर अभिमित्र पहाड़ के दूसरी ओर उतर गया। पहाड़ के दूसरी ओर एक बड़ा शहर दीख पड़ा। शहर में जाने पर अभिमित्र को एक ढिंढोरा सुनाई पड़ा। वह कुछ नहीं समझ सका। इसलिए उसने एक राही से पूछा—"भाई! ढिंढोरा वाला क्या कहता है?"

"वही रोज का ढिंढोरा है। कोई नई बात नहीं है।" उसने जवाब दिया।

"हो सकता है। लेकिन भाई! मैं अजनबी हूँ। मेरे लिए तो यह नई ही बात है।" अभिमित्र ने कहा।

तब उस आदमी ने कहा—'अच्छा, तो सुनो! इस देश के राजा के एक लड़की है। उसका दिमाग ज़रा खराब हो गया है। वह कहती है—'मैं ब्याह नहीं करूँगी। करूँगी तो उसी से जो शतदल-सुन्दरी के मंदिर में जाकर जवाहर ले आएगा।' कहते हैं कि बचपन में किसी पगले साधु ने आकर उसे यह बात सुनाई थी। जब उससे पूछा जाता है कि 'कहाँ है वह मंदिर?' तो वह कहती है—'मैं क्या जानूँ!' मालूम नहीं, ऐसा कोई मंदिर संसार में है कि नहीं! फिर उस मंदिर में से जवाहर कौन ले आए! राजा भी ज़रा सनकी है। नहीं तो उस पगली बिटिया की बात मान कर रोज़ इस बात का ढिंढोरा क्यों पिटवाता! अब समझ गए न कि ढिंढोरा क्या है!" यह कह कर वह आदमी हंसते हुए चला गया।

अग्निमित्र ने उस शहर के राजा के पास जाकर कहा—"मैं शतदल-सुंदरी के मंदिर में से जवाहर लाया हूँ।"

यह सुन कर सब लोगों ने सोचा—"यह भी कोई पागल है।" लेकिन जब अग्निमित्र ने जवाहरों की पोटली खोल कर दिखाई तो सब के मुँह बन्द हो गए।

इतने में राजा की लड़की को यह खबर मालूम हुई। तुरंत वह दौड़ती हुई आई और अग्निमित्र के गले में वरमाला डाल दी।

तब बहुत से लोग अग्निमित्र को तङ्ग करने लगे कि "हमें भी बताओ न! वह मंदिर कहाँ है!"

अग्निमित्र ने उनसे कोई बात न छिपाई। उसने उनसे जड़ी का प्रभाव कह सुनाया। यह जान कर बहुत से लोग शङ्करगिरि पहाड़ के पास जाकर उस जड़ी को खोजने लगे। वे आज भी उसकी तलाश कर ही रहे हैं।

3

[सुरंग-महल में अपनी तीनों लड़कियों को छिपा कर खुशी खुशी लौटने वाला राजा महल के नजदीक आते ही धाड़ मार कर रोने लगा और उसे देखते ही रानी मूर्छित होकर गिर पड़ी। इतना तो आपने पिछले अंक में पढ़ लिया। अब आगे पढ़िए।]

दास-दासी-गण चारों ओर से एकत्र होकर राजा को ढाढ़स बँधाने लगे और बेहोश रानी की सेवा-शुश्रूषा करने लगे। थोड़ी देर तक वहाँ जितने लोग थे सब के चेहरे उतर गए थे।

इतने में राज-वैद्य ने आकर रानी को दवा दी। कुछ देर बाद रानी को होश आया। तब राजा को भी धीरज हुआ। तब राज-वैद्य ने पूछा कि बात क्या हुई। राजा ने कहना शुरू किया—"मैं रोज की तरह दासियों के साथ तीनों लड़कियों को लेकर बाग में सैर कराने गया। आप तो जानते ही हैं कि इन चार बरसों में लड़कियों के सिर पर कैसी कैसी बलाएँ आईं। इसीलिए मैं इतना सावधान रहता हूँ। इसीलिए मैं लड़कियों को महल से बाहर ले जाने के पहले एक सौ नौकरों को उनके साथ कर देता हूँ। आज भी बाग में एक सौ नौकर चारों ओर पहरा दे रहे थे और मैं दासियों के साथ लड़कियों को लेकर बीच में टहल रहा था। इतने में न जाने, कहाँ से एक बड़ा बवंडर आया। एक पल में

चारों ओर से धूल उठी और आसमान में अँधेरा छा गया। हम सब ने डर के मारे आँखें मूँद लीं। जब मैंने फिर आँखें खोलीं तो देखा कि तीन गीध आए और मेरी तीनों लड़कियों को उठा ले गए।" यों राजा और भी कुछ कहने जा रहा था कि रानी फिर बेहोश होकर गिर पड़ी।

दासियाँ घबरा कर उनकी ओर दौड़ीं। थोड़ी देर बाद रानी को फिर होश आया। तब राजा ने फिर कहना शुरू किया—"यह सब एक पल में हो गया। दूसरे ही क्षण से मैं अपने नौकरों और दासियों के साथ गीधों का पीछा करने लगा।

लेकिन आदत न होने के कारण मैं थोड़ी दूर चलने में ही थक गया। इसलिए धीरे धीरे चलने लगा।

मेरे नौकर-चाकर बहुत दूर तक गीधों के पीछे दौड़ते रहे। लेकिन गीध उड़ते-उड़ते आसमान में ग़ायब हो गए और नौकरों को निराश होकर खाली हाथ लौटना पड़ा।

उनको लौटते देख कर मेरे भी पैर मानों धरती में गड़ गए और मैं वहीं खड़ा रह गया। इतने में एक और अचरज हुआ।

मेरे नौकर और तीनों दासियाँ थोड़ी दूर जाने पर चिड़ियाँ बन गए और गीधों के पीछे वे भी आसमान में उड़ गए।

यह सब देख कर मेरा हृदय बहुत व्याकुल हो गया। मैंने सोचा कि भगवान न जाने, क्यों हमें ऐसे कष्ट दे रहे हैं और कितने दिन तक हमें यों कष्ट भोगना होगा!" इतना कह कर राजा फिर रोने-पीटने लगा।

इधर राजा के महल में जो उथल-पुथल मची, उसकी खबर राजा के ज्योतिषी के पास पहुँची और वह दौड़ा आ पहुँचा।

ज्योतिषी को देखते ही रानी रोती-कलपती उसके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—"उस दिन आपने बहुत समझाया था। लेकिन हम अपनी लड़कियों की रक्षा न कर सके। वे हमारी आँखों से ओट हो गईं। पोथी-पत्रा देख कर एक बात बताइए! वे जिन्दा हैं या नहीं! जब तक यह मालूम न हो जाएगा, तब तक हमको चैन न मिलेगा।" यह कह कर वह रोने लगी।

ज्योतिषी ने फिर एक बार लड़कियों की जन्म-कुण्डलियाँ देखीं और गुन-गुन कर रानी से कहा—

"ज्योतिष—शास्त्र तो कहता है कि लड़कियाँ मजे में हैं। उन पर अभी कोई संकट नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब कैसे हो गया। मैं यह तो नहीं बता सकता कि लड़कियाँ अभी कहाँ हैं। लेकिन इतना दावे के साथ कह सकता हूँ कि वे सकुशल हैं। सिर्फ लड़कियाँ ही नहीं उनके साथ जो दास-दासियाँ हैं, वे सब भी कुशल से हैं।

यह भी निश्चय है कि तीन साल के अन्दर कभी न कभी आपको वे अवश्य मिल जाएँगी। इसलिए भगवान पर भरोसा करके धीरज रखिए और मिलन की राह देखिए। इसके सिवा हमारे हाथ में और है ही क्या!" ज्योतिषी ने रानी को ढाढ़स बँधाया।

पढ़ने वाले समझ ही गए होंगे कि राजा झूठ-मूठ ढोंग करता आया था और उसने रानी को जो लम्बी-चौड़ी कहानी कही, वह भी उसकी मन-गढ़ंत थी। राजा को मालूम था कि रानी जरूर लड़कियों और दास-दासियों के बारे में सवाल करेगी। इसलिए उसने यह आकाश-पाताल का कुलाबा मिलाया। सुरङ्ग की बात वह रानी को बता देता। लेकिन उसे सन्देह था कि धीरे धीरे कहीं यह बात फैल न जाए और लड़कियों को निगलने की ताक में बैठी हुई दुष्ट-शक्ति को कहीं मालूम न हो जाए। अपनी लाड़ली बेटियों की जान बचाने के लिए, राजा ने इतनी बड़ी कहानी गढ़ ली। राजा की बातों का भोली रानी ने विश्वास कर लिया। राज-महल के दूसरे लोगों ने भी उसकी बातें सच मान लीं। हाँ! ज्योतिषी की कृपा से एक बात हुई। लड़कियों को जिन्दा जान कर रानी के मन में कुछ तसल्ली हो गई। रानी ने यह सोच कर सन्तोष कर लिया कि लड़कियाँ जिन्दा तो हैं; यही मेरे लिए काफी है। पर उसने राजा से अनुरोध किया कि वह राज में चारों ओर दूतों को भेज कर उनका पता लगाए।

राजा तो सब कुछ जानता ही था। फिर भी रानी को सन्तोष देने के लिए उसने राज्य में चारों ओर दूत भेज दिए।

राजा के दूत घोड़ों पर चढ़ कर चले और सारे राज्य में घूम आए। लेकिन लड़कियाँ जमीन पर तो थीं नहीं कि दूतों को उनका पता चलता। वे तो सकुशल जमीन के

अन्दर थी। इसी से जितने दूत उन्हें खोजने गए थे सब अपना सा मुँह लेकर लौट आए। इस तरह ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए त्यों-त्यों रानी की घबराहट बढ़ती गई।

लेकिन राजा खुश था कि राजकुमारियाँ तो ऐसी जगह सुरक्षित हैं कि उनका पता देवताओं को भी नहीं चल सकता। लेकिन ऊपर से वह भी बहुत शोक प्रगट करता था। देखने वालों को ऐसा लगता था कि राजा भी लड़कियों की चिन्ता में घुला जा रहा है। लेकिन वह रोज किसी न किसी समय गुप्त-रूप से सुरङ्ग में जाता और लड़कियों को देख आता था। लड़कियों को सुरक्षित और हँसी-खुशी से रहते देख कर उसकी सारी चिन्ता दूर हो गई।

इस तरह एकाध महीना बीता। लेकिन अब राजा के मन में एक भारी सन्देह उठा। बात यह हुई कि लड़कियों को देखे बिना उसे एक दिन भी कल नहीं पड़ती थी। लेकिन इस तरह सब की आँख बचा कर रोज सुरङ्ग में आना-जाना तो कोई आसान काम नहीं था।

अगर किसी ने उसे इस तरह आते जाते देख लिया तो! तब तो सारा भण्डा ही फूट जाएगा। धीरे धीरे सुरङ्ग की बात सबको मालूम हो जाएगी और उसका किया-कराया सब मिट्टी में मिल जाएगा। अगर यह बात किसी तरह दुष्ट-शक्ति को मालूम हो गई तब तो जान पर ही आ बीतेगी। इस चिन्ता में पड़ कर राजा दिन-दिन घुलने लगा। बहुत दिमाग लड़ाने पर भी

उसे दूसरा कोई उपाय न सूझा। इस तरह कुछ दिन और बीत गए।

एक दिन की बात है कि राजा चुपचाप लड़कियों को देख आया था। सब सकुशल थीं। राजा चैन से सो रहा था। अचानक गाढ़ी नींद में उसे ऐसा लगा जैसे कोई थपकी देकर उसे जगा रहा है। राजा हड़बड़ा कर उठ बैठा। लेकिन अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न हुआ जब उसने देखा कि जगाने वाली उसकी लड़की बिटिया सुहासिनी थी।

कुछ क्षण राजा ने सोचा कि वह सपना देख रहा है। लेकिन जब वह लड़की उसकी बगल में बैठ गई और हँसती-खेलती उससे बातें करने लगी तो राजा घबरा उठा। उसने सोचा कि यह सपना कैसे हो सकता है! सुहासिनी तो मुझे छू रही है और मैं उसकी तोतली बोली सुन रहा हूँ।

वह सुहासिनी को छाती से लगा कर कहने लगा—"बेटी! यह क्या! तू यहाँ कैसे आ गई! कहाँ गईं वे दासियाँ! नौकर-चाकर सब कहाँ चले गए! आधी रात के के वक्त तुम अकेली यहाँ कैसे आ गईं! मैं तो दङ्ग हूँ देख कर!" अचरज और दहशत के मारे राजा हजारों सवाल पूछने लग गया।

सुहासिनी थोड़ी देर तक कुछ न बोली। फिर पिता का हाथ पकड़ कर उसने पलङ्ग से नीचे उतारा। दीवार पर लटकती हुई एक तस्वीर के पास खींच ले गई और बोली—"देखते हैं यह तस्वीर! इसी में से आई हूँ।"

लेकिन राजा की समझ में कुछ न आया। उसने कहा—"बिटिया! मैं पूछ रहा हूँ कि तू यहाँ कैसे आई? तू तस्वीर की ओर उँगली क्यों उठा रही है? क्या तू यह तस्वीर लेना चाहती है? मैं तुझे ऐसी बहुत सी तस्वीरें लाकर दूँगा। पर पहले यह तो बता दे कि तू यहाँ आई कैसे?" राजा ने बार-बार पूछा।

"यही तो बता रही हूँ पिताजी! मैं उसी तस्वीर में से आई हूँ।" लाड़ली सुहासिनी ने कहा।

राजा ने तस्वीर को वहाँ से हटाया तो हक्का-बक्का खड़ा रह गया। काटो तो शरीर में खून नहीं। बात यह थी कि तस्वीर जहाँ लटक रही थी, वहाँ दीवार में एक बड़ा सूराख उसे दिखाई दिया। तुरन्त राजा सुहासिनी को लेकर उस सूराख में घुस गया। कुछ दूर टटोलते जाने पर उसे मालूम हुआ कि यह एक सुरङ्ग है। वह लड़की को गोद में उठाए बड़ी सावधानी से टटोलते हुए आगे बढ़ने लगा।

राजा आधी दूर गया था कि सुहासिनी

को खोजती हुई उसकी दासी आती दीख पड़ी। सुहासिनी जिस समय अपने कमरे से गायब हुई, बेचारी दासियाँ सो रही थीं। लेकिन थोड़ी देर बाद जब वे अचानक जग गईं और देखा कि सुहासिनी की खाट खाली है, तो घबरा कर वे उसे खोजने चलीं। वह दासी सुरंग में भटकती हुई बहुत दूर तक चली आई।

राजा को बेटी के साथ आते देख कर उसकी जान में जान आई। तीनों अचरज के साथ सुहासिनी के कमरे की ओर दौड़ चले।

लेकिन यह क्या! सुहासिनी के कमरे का दरवाजा कहाँ! यह देख कर राजा और दासी घबरा गए। उन्हें शक हुआ कि कहीं वे इस सुरंग की राह तो नहीं भूल गए!

यह सोच कर राजा ने दासी को सुहासिनी के साथ वहीं खड़े रहने को कहा और खुद लौट कर पीछे चला। वह देखना चाहता था कि यह एक ही सुरंग है या कई। आखिर तक जाने पर उसे मालूम हुआ कि एक ही सुरंग है। क्योंकि राजा अपने कमरे तक पहुँच गया था। अब राजा बहुत डरा और चिन्ता में डूबा हुआ फिर उस जगह लौटा जहाँ वह दासी और राजकुमारी को छोड़ गया था। लेकिन लौट कर देखता क्या है कि दासी और सुहासिनी का वहीं नामो-निशान नहीं। यह देख कर राजा पागल सा हो गया। वह मुट्ठी बाँधे सुरंग में दौड़ने लगा।

[राजा के मन में क्या संदेह हुआ? पग-पग पर ये उलझनें कैसी? दासी और सुहासिनी कहाँ गईं? क्या राजा उनका पता पा सका? आदि बातें अगले अंक में पढ़िए!]

भगवान बुद्ध का जिस काल में अवतार हुआ था, उसी समय एक व्याध रहता था। वह बड़ा ही बलवान था। साथ ही उसका निशाना भी अचूक था। इसलिए उसे अत्यन्त गर्व था कि उसके समान शिकारी संसार में दूसरा कोई नहीं है। सवेरे से शाम तक आखेट करना ही उसका काम था। शिकार करना उसके लिए सिर्फ़ पेट के लिए नहीं था। शिकार खेलने में उसको आनन्द आता था। अपने निशाने से घायल होकर प्राण छोड़ते हुए मृग को देख कर उसे अपूर्व आह्लाद होता था।

करुणाशील बुद्ध को जब उस व्याध की क्रूरता का समाचार मिला तो उन्होंने उसे सुधारना चाहा। लेकिन वे उसे उपदेश देकर ही चुप हो जाना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि उस व्याध को सद्धर्म का बोध हो जाए।

एक दिन वह व्याध रोज़ की तरह जङ्गल में शिकार खेलने गया। भगवान बुद्ध भी व्याध के वेश में उसी जङ्गल में गए। दोनों का सामना हुआ।

"कौन हो तुम?" व्याध ने कर्कश स्वर में डाँट कर पूछा।

"मैं भी एक शिकारी हूँ। मेरा नाम है शबर।" बुद्ध ने कहा।

व्याध को क्रोध तो था ही। यह सुन कर अचरज भी हुआ। "यह मेरे राज्य में क्यों आया है?" उसने सोचा। "शिकारी के लिए सिर्फ़ मोटी-ताज़ी देह ही नहीं, फुर्ती और हस्त-लाघव भी चाहिए। मैं चौकड़ी भरते हुए हिरन पर आसानी से निशाना साध सकता हूँ। क्या तुम में यह कौशल है?" व्याध ने शबर से पूछा।

उस नए शिकारी ने मुसकुराते हुए जवाब दिया—"एक की क्या बात, मैं तो

एक तीर में सैकड़ों हिरनों का शिकार कर सकता हूँ।"

"अरे! मेरे सामने ऐसी डींग मत हाँको!" यह कह व्याध हँसने लगा।

"हँसते क्यों हो! आँखों से देख लो न!" यह कह कर शबर ने व्याध को अपने पीछे आने को कहा। थोड़ी दूर जाने पर हिरनों का एक बड़ा झुण्ड दिखाई पड़ा।

व्याध दस-पन्द्रह साल से इस जङ्गल में शिकार कर रहा था। लेकिन उसने हिरनों का इतना बड़ा झुण्ड कभी नहीं देखा था। इसलिए उसने कहा—"वाह! कितना बड़ा झुण्ड है! सौ से भी ज्यादा होंगे।"

तब उस नए शिकारी ने कहा—"अटकल खूब लगाते हो! पहले मुझे निशाना तो लगाने दो। फिर तुम फुरसत से गिनते रहना।" यह कह कर उसने निशाना लगा कर एक बाण मारा। वह बाण एक-एक करके सभी हिरनों को छेद गया और वे सभी उलट-उलट कर जमीन पर गिर पड़े। तब बुद्ध ने कहा—"अब जाकर तुम गिन आओ। आते वक्त एक हिरन को उठा लाना। चार दिन के लिए वह काफी होगा।"

व्याध ने जाकर हिरनों को गिना। पूरे पाँच सौ निकले। "एक तीर से इसने पाँच सौ हिरनों को मार लिया। यह तो बड़ा भारी मायावी जान पड़ता है। यह कोई मामूली व्याध तो नहीं है।" यह सोच कर व्याध ने एक हिरन को कंधे पर उठा लेना चाहा। लेकिन वह बहुत भारी था। उसके उठाए न उठा।

व्याध बड़ा बलवान था। भारी से भारी शिकार को वह ऐसे ही उठा लेता था। लेकिन आज एक मामूली हिरन उस के उठाए न उठ रहा था! इसमें क्या रहस्य था! उसने एक दूसरे हिरन पर अपनी

ताकत आजमाई। लेकिन वह भी उससे न उठा। आखिर वह हाथ झुलाते लौट आया।

शबर के सामने आते ही वह उस अद्भुत शिकारी के पैरों पर गिर पड़ा और बोला— "भाई, तुम तो कोई मामूली आदमी नहीं जान पड़ते हो। एक ही तीर से तुमने पाँच सौ हिरनों का शिकार कर लिया! मुझे भी वह कौशल सिखा दो जिसके कारण तुम इतने चतुर बन गए हो!"

यह सुन कर भगवान ने कहा—"अच्छा! मैं तुम्हें वह कौशल बतला दूँगा। लेकिन वह सीखने के लिए पहले तुम्हें कम से कम एक मास तक माँस न खाना होगा। सिर्फ फल खाकर रहना होगा। किसी जीव को कोई कष्ट नहीं पहुँचाना होगा। इस तरह अगर तुम एक मास तक नियम-पूर्वक रहोगे, तो मैं तुम्हें वह कौशल सिखा दूँगा।"

व्याध ने शर्त मंजूर कर ली। एक महीने के बाद आने का वादा करके माया-व्याध चला गया।

व्याध जो माँस खाकर ही रहता था, अब भारी दिक्कत में पड़ गया। कुछ दिन तो यह नियम कठिन जान पड़ा। इतना ही नहीं, धनुष-बाण दीवार पर टाँग कर उसे दिन भर यों ही मन मारे बैठे रहना पड़ता था। यह भी कोई आसान बात न थी। लेकिन वह था बात का बड़ा पक्का आदमी। इसलिए उसने अपनी टेक न छोड़ी। धीरे-धीरे जब उसे फल खाने की आदत हो गई तो उसने सोचा—"मनुष्य माँस खाए बिना भी जी सकता है। फिर वह नाहक जीव की हत्या क्यों करता है!" इस तरह व्याध का मन बदलने लगा। घायल होकर तड़पते पशुओं के चित्र उसकी आँखों के आगे नाचने लगे। "मैंने क्यों अकारण इतने जीवों को मारा था!" यह सोच कर वह बहुत पछताने लगा। तब से उसके मन में हिंसा से घृणा

पैदा हो गई। देखते-देखते वह व्याध सन्त बन गया।

एक महीना खतम होते ही बुद्ध-देव व्याध-रूप में उसके पास आ खड़े हुए। "क्या तुम वह कौशल सीखना चाहते हो?" उन्होंने पूछा।

व्याध ने काँपते हुए जवाब दिया—"नहीं! अब मैं वह कौशल नहीं सीखूँगा। मैंने अब तक बहुत पाप किए हैं। अब वह कौशल सीख कर पापों का पहाड़ खड़ा नहीं करना चाहता।" यह कह कर उसने आन्तरिक अनुताप प्रगट किया।

यह देख कर बुद्ध ने अपना असली रूप दिखाया और कहा—"हे भाई! तुम बच गए! अब कोई सोच न करो। लेकिन अपना व्रत कभी न छोड़ना।"

व्याध ने भगवान के पैरों पड़ कर कहा—"भगवन्! उस दिन मैं नहीं जान सका कि मेरे हृदय में करुणा जगाने के लिए ही आपने व्याध के रूप में मुझे दर्शन दिया था। लेकिन मेरी एक बात का जवाब दीजिए! उस दिन आपने जो पाँच सौ हिरन मारे थे, मैं उनमें से एक को भी न उठा सका था! इसमें रहस्य क्या था?"

भगवान ने जवाब दिया—"वत्स! यह भी कोई प्रश्न है? हम रोज़ लाखों जीवों को मार सकते हैं। लेकिन एक को भी उठा नहीं सकते। मनुष्य मार सकता है। लेकिन जिला नहीं सकता। मैंने यही तुम्हें बताने के लिए उस हिरन को उतना भारी बना दिया था। मनुष्य में प्राण देने की शक्ति नहीं है। इसीलिए उसे प्राण लेने का अधिकार भी नहीं। इसी से जाना जा सकता है कि हिंसा करना कितना भारी पाप है?" व्याध को इस तरह मुक्ति का मार्ग दिखा कर भगवान अन्तर्धान हो गए।

मोहन लाल पहली बार काशी जा रहे थे। गाड़ी पर चढ़ते ही उन्हें चिंता हो गई कि "काशी जाकर मैं ठहरूँगा कहाँ!" उनके डिब्बे में जो मुसाफिर थे उनमें काशी जाने वाला कोई न था। मोगलसराय स्टेशन पर मोहन लाल की एक आदमी से जान-पहचान हो गई।

उसने कहा—"आप घबराइए नहीं। मेरा एक दोस्त काशी में रहता है। मैं आपको उसके घर छोड़ दूँगा।"

काशी पहुँचने पर एक मोटर पर चढ़ कर दोनों चल दिए। थोड़ी देर में मोटर एक बड़े महल के सामने जाकर रुकी। तब उस आदमी ने कहा—"यही मेरे दोस्त का महल है। आप सीधे अन्दर चले जाइए। कोई फिक्र नहीं। मुझे जरा काम है। इसलिए जरा मैं दूसरी जगह जा रहा हूँ।"

मोहन लाल ने पाँच रुपए का नोट निकाल कर उस आदमी को दिया और कहा—"मोटर का किराया दे दीजिए।"

उस आदमी ने वह नोट लेने से इनकार कर दिया और चला गया। मोहन लाल ने मन ही मन उस आदमी को धन्यवाद दिया और अपने भाग्य को सराहते हुए, पेटी और बिछौना उठा कर अन्दर चले।

एक दाढ़ी वाला जो एक साधु सा जान पड़ता था, आगे आया और बोला—"आइए! पधारिए!" आव-भगत के साथ वह उन्हें अन्दर ले गया।

मोहन लाल ने अपना सब हाल कह कर उस आदमी का भी नाम-ठिकाना बता दिया जो उसे मोटर पर यहाँ तक पहुँचा गया था। फिर कहा—"मैं आपका नाम पूछना तो भूल गया।"

"मेरा नाम तो रामनाथ है। लेकिन लोग प्रायः मुझे 'लोकोद्धारक' कह कर

श्यामू

है। हाँ, आपकी इच्छा हो तो शाम को बाजार से ताला खरीद कर ले आइए और अपने कमरे में लगा दीजिए। तब तक अपनी पेटी का ताला निकाल कर लगा लीजिए।" उसके बाद खा-पीकर दोनों ने आराम किया। जब साँझ हो गई तो दोनों शहर में घूमने चले। मोहन लाल ने सन्दूक का ताला कमरे में लगा दिया था। लेकिन लोकोद्धारक के बाकी सभी कमरे खुले ही थे। शहर में दोनों खूब घूमते रहे। उसके बाद ताला खरीदने गए। मोहन लाल ने एक मजबूत ताला खरीद लिया और दोनों घर लौटे।

पुकारते हैं। जो लोग दूर-दूर से आते हैं उनकी सहायता करना ही मेरा काम है। इसीलिए लोगों ने प्रेम-वश मेरा यह नाम रख दिया है।" उस आदमी ने कहा।

उसके बाद उस लोकोद्धारक ने मोहन लाल को एक लम्बे-चौड़े कमरे में ले जाकर कहा—'आप अपना सामान इस कमरे में रख लीजिए।' मोहन लाल ने 'ताले' का नाम लिया ही था कि लोकोद्धारक हँस कर कहने लगा—"मेरे घर में ताले-कुंजी की कुछ जरूरत नहीं। मैं अपना घर हमेशा खुला खुला ही रखता हूँ। लेकिन आज तक मेरे घर से एक तिनका भी चोरी नहीं गया

घर में सब चीज़ें ज्यों-की-त्यों थीं। मोहन लाल ने सोचा—"लोकोद्धारक का कहना सच है।' उस घर में मोहन लाल को सब तरह की सुविधाएँ थीं। किसी चीज़ की तकलीफ न थी। मोहन लाल की जेब से एक पाई भी खर्च न हुई। सारा खर्च लोकोद्धारक ही कर रहा था। यह देख कर मोहन लाल को बेहद खुशी हुई।

इस तरह दिन जल्दी-जल्दी बीतते गए। घर लौटने के एक दिन पहले मोहन लाल लोकोद्धारक से कहने लगे—"लोकोद्धारकजी! मैं आपका एहसान कभी नहीं भुला सकता।

आपने जो मेरी मदद की, जो उपकार किया उसके बदले...." वह और भी कुछ कहने जा रहा था कि लोकोद्धारक ने टोक कर कहा—"आप मेरे प्रेम का मूल्य क्या रुपए से लगाना चाहते हैं! माफ कीजिए! मैं रुपए का लालची नहीं हूँ। मेरा तो ध्येय है दूसरों की भलाई करना।"

"क्षमा कीजिए! मैं सात दिन तक आपके साथ रह कर भी आपका स्वभाव न समझ सका। मैंने रुपए की बात चला कर आपके मन को कष्ट दिया। लेकिन आप मेरी एक बात सुनिए! आप रुपए लीजिए और दूसरों की भलाई में खर्च कर दीजिए।" यह कह कर उसने सौ रुपए का एक नोट देना चाहा।

"मैं तो रुपए हाथ से छूता भी नहीं। आप देना ही चाहते हैं तो उस डिब्बे में डाल दीजिए।" यह कह कर लोकोद्धारक ने एक डिब्बा दिखा दिया।

मोहन लाल ने सौ रुपए उस डिब्बे में डाल दिए। उस शाम को दोनों फिर विश्वनाथ के दर्शन करने गए और अँधेरा होने पर घर लौट आए। मोहन लाल ने अपने कमरे का ताला खोला तो कमरा देख कर हक्का-बक्का रह गया। पेटी खुली पड़ी थी। कपड़े सब ज्यों-के-त्यों थे। लेकिन रुपए गायब। इतने में लोकोद्धारक कमरे में आया और पूछने लगा—"कुछ खो गया है क्या?"

"हाँ, कपड़े-लत्ते तो ज्यों-के-त्यों हैं। लेकिन रुपया सब गायब है। सबसे अचरज तो यह है कि कमरे का ताला लगा ही हुआ था।" मोहन लाल ने कहा।

"क्या कहा! ताला लगा ही हुआ था! न जाने कैसे घुस गए! रसोई-घर में हाँडियाँ भी फोड़ गए हैं वे बदमाश। इतने दिनों से इस घर में रहता आया हूँ। लेकिन आज तक कभी एक भी चीज नहीं खोई थी। अपने लिए मुझे कोई चिन्ता नहीं है।

लेकिन आपके रुपए के लिए तो मुझे बेहद दुख हो रहा है।" लोकोद्धारक ने बहुत दुखी होकर कहा।

"इसमें आपका क्या दोष है! मेरा भाग्य ही अच्छा न था। मेरी वजह से आपकी भी चीजें चली गईं। अब बताइए क्या करूँ! क्या पुलिस में रिपोर्ट कर दूँ!" मोहन लाल ने पूछा।

"रिपोर्ट करने से क्या फायदा! जो रुपया गया सो तो गया ही। बेकार की हैरानी और परेशानी ऊपर से। मैं तो रिपोर्ट नहीं करूँगा। क्योंकि यह मेरे सिद्धान्त के खिलाफ है। हाँ, अब यह सोचना है कि आप घर कैसे पहुँचेंगे! हाँ, तो उस दिन आपने डिब्बे में सौ रुपए डाल दिए थे, वे ले लीजिए।" यह कह कर लोकोद्धारक सौ रुपए देने लगा।

लेकिन मोहन लाल ने कहा—"सौ रुपए क्या करूँगा! रेल खर्च भर के लिए दे दीजिए। बाकी अपने पास रखिए।"

"आपकी जैसी इच्छा!" यह कह लोकोद्धारक ने चालीस रुपए निकाल कर मोहन लाल को दिए। मोहन लाल उसी रात को घर चल दिए।

* * *

एक साल बीत गया। एक दिन सवेरे मोहन लाल अपने घर में बैठे अखबार पढ़ रहे थे कि उन्हें एक कोने में एक सनसनी-खेज खबर दिखाई दी। बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'काशी के यात्रियों को धोखा देने वाला 'लोकोद्धारक गिरोह' गिरफ्तार। लोकोद्धारक को तीन साल की कड़ी सजा।" पूरी खबर पढ़ने के बाद मोहन लाल को मालूम हुआ कि उसकी रेल के डिब्बे में जिस आदमी से जान-पहचान हुई थी वह, तालों का दूकानदार, और भी कुछ लोग उस गिरोह में शामिल थे और उनका नेता 'लोकोद्धारक' था। जब यह बात उनके घर वालों को मालूम हुई तो सब लोग हँसने लगे।

दिल्ली के बादशाह अकबर के समय में हस्तिनापुर में तुलसीदास नामक एक सन्त रहते थे। वे रोज नजदीक के एक गाँव में जाकर रामायण बाँचा करते थे। वे बड़े पण्डित, कवि और भक्त थे। इसलिए उनकी कथा में बहुत-से लोग जमा होते थे। कथा सुनने वालों में एक बूढ़ा ब्रह्मचारी भी था जो कथा-स्थल में सबसे पहले आता था। एक फटा-पुराना अँगोछा उसके बदन पर होता। वह बड़ी श्रद्धा से कथा सुनता।

तुलसीदास ऊँची आवाज से कथा कहते जिससे सब कोई सुन सकें। इसलिए बार-बार उनका गला सूख जाता और बार-बार वे पानी पीते थे।

बूढ़ा ब्रह्मचारी एक लोटे में पानी भर लाता और बड़ी नम्रता से तुलसीदास जी के सामने रख देता। रोज आधी रात तक वे कथा कहते। फिर रामायण और लोटा लेकर हस्तिनापुर लौट आते थे। बीच में एक पीपल का पेड़ पड़ता था। लोटे का बचा-खुचा पानी तुलसीदास जी उस पीपल के पेड़ की जड़ में डाल देते थे। बहुत दिन तक ऐसा ही होता रहा। एक दिन तुलसीदास जी लोटे का पानी पीपल की जड़ में डाल कर चले ही थे कि किसी ने पीछे से पुकारा—"बेटा! जरा ठहर जाओ!"

उस निर्जन प्रदेश में रात के वक्त यह शब्द सुन कर तुलसीदासजी को बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने सोचा—"कौन पुकारता है मुझे?" इतने में एक ब्रह्म-राक्षस पीपल के पेड़ से नीचे उतरा और उन के सामने आकर खड़ा हो गया।

ब्रह्म-राक्षस को देख कर तुलसीदास जी डर गए। लेकिन ब्रह्म-राक्षस ने मीठे शब्दों में कहा—"बेटा! डरो मत! मैं भी एक समय तुम्हारी ही तरह एक बड़ा पण्डित था।

कृष्ण मोहन

लेकिन अनेकों बुरे कर्म करके लोगों को मैंने बहुत कष्ट दिए। इसी से मुझे ब्रह्म-राक्षस होना पड़ा। खैर, मेरी बात जाने दो! बोलो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

तुलसीदासजी ने चकित होकर कहा—"मुझे तो कुछ नहीं चाहिए! लेकिन आप मुझ पर यह कृपा क्यों दिखा रहे हैं?"

"ऐसा न सोचना कि मैं अकारण तुमसे प्रसन्न हो गया हूँ। मैं प्यास के मारे परेशान था। लेकिन जब से तुम इस पेड़ में पानी डालने लगे, मेरी प्यास मिट गई। यों मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ और बदले में कुछ भलाई करना चाहता हूँ।" वह राक्षस कहने लगा।

तुलसीदास ने कहा—"भगवन्! मैं राम का भक्त हूँ। बहुत दिनों से राम-नाम जपता आया हूँ। राम का गुण-गान करके अपना जीवन बिता रहा हूँ। लेकिन अभी तक मुझे राम-दर्शन नहीं हुए। मेरी और कोई इच्छा नहीं। सिर्फ़ एक बार राम का दर्शन हो जाए। इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं चाहिए।" तुलसीदास ने अपने मन की बात कह दी।

उनकी यह बात सुन कर ब्रह्म-राक्षस थोड़ी देर तक चुप रह गया, कुछ नहीं बोला। आखिर उसने मुँह खोला—"बेटा! तुमने बहुत अच्छी बात कही। लेकिन यह तो मेरी शक्ति के बाहर की बात है। पर मैं एक उपाय तुम्हें बता सकता हूँ। मैं एक ऐसे आदमी का पता दूँगा, जो तुम्हें रामजी के दर्शन करा सकता है। तुम उस आदमी को कथा-स्थल पर रोज देखते हो!"

"कौन हैं वे महात्मा?" तुलसीदास ने व्याकुल होकर पूछा।

"तुम कथा बाँचते हो, तब बीच-बीच में तुम्हें एक बूढ़ा पानी लाकर देता है न! हाँ, जानते हो? वह बूढ़ा कौन है? वह और कोई नहीं, श्रीरामचन्द्र का प्रिय भक्त हनुमान है!" ब्रह्म-राक्षस ने कहा।

यह बात सुन कर तुलसीदास को बड़ा आनन्द हुआ। वे ब्रह्म-राक्षस के चरणों में पड़ गए। आश्चर्य! तुलसीदास का स्पर्श होते ही ब्रह्म-राक्षस का शाप छूट गया। वह एक दिव्य देह-धारी गन्धर्व बन गया।

"भक्त-राज! आपके स्पर्श से मुझे फिर अपना रूप मिल गया। कितना भाग्यशाली हूं मैं! आपका यह ऋण मैं कैसे चुका सकूँगा! लेकिन मुझे विश्वास है कि आपको शीघ्र ही रामचन्द्र के दर्शन होंगे। अब मुझे बिदा दीजिए!" यह कह कर वह गन्धर्व तुलसीदास जी का गुण-गान करता हुआ चला गया।

दूसरे दिन तुलसीदास जी कथा बाँचने लगे। लेकिन उनका सारा ध्यान एक कोने में बैठे हुए उस बूढ़े ब्रह्मचारी पर लगा हुआ था। इसलिए उन्होंने उस दिन जल्दी ही कथा खतम कर दी।

सब लोग चले गए। वह बूढ़ा ब्रह्मचारी भी जाते-जाते तुलसीदास के पास आकर बोला—"पण्डित जी! आज आपने कथा जल्दी पूरी कर दी। क्यों, क्या तबीयत अच्छी नहीं है आज!"

तुलसीदास ने झट उनके पैर पकड़ लिए और कहा—"सच ही आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है। आपकी कृपा से ही वह ठीक होगी। आप ही मेरे राज-वैद्य हैं। अब तक आप मेरे शरीर की प्यास मिटाते आए थे। अब मेरी आत्मा की प्यास भी बुझा दीजिए। राम-दर्शन के बिना मेरी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी। मुझे मालूम है कि आप कृपा करेंगे तो मुझे वह दुर्लभ धन प्राप्त हो जाएगा। भगवान आपकी इच्छा को टाल नहीं सकते, यह भी मैं खूब जानता हूं।" यह कह कर तुलसीदास आँसू से उनके चरण धोने लग गए।

हनुमान ने मन ही मन पुलकित होकर

हठात् आवाज आई—"क्यों तुलसीदास ! अब मैं आऊँ न !"

सीताजी ने कहा—"तुलसीदास, हमारी एक इच्छा है, तुम उसे पूरी करो।"

तुलसीदास कृतार्थ भाव से सिर झुकाए खड़े रहे।

सीताजी भगवान की ओर देख कर कहने लगीं—'देखो, भक्तवर! वाल्मीकि की रामायण संस्कृत में है। साधारण लोग उसे अब समझ नहीं सकते। तुम अपनी भाषा में ऐसी रामायण लिखो जिसे सब लोग सुगमता से समझ सकें।" इतना कह कर सब लोग अन्तर्धान हो गए।

सोचा—"आज मेरा भण्डा फूट गया।" उन्होंने मुसकुरा कर कहा—"अच्छा आओ! भगवान के दर्शन तुम्हें होंगे।" यह कह कर हनुमान अन्तर्धान हो गए।

तुलसीदास जी घर गए और राम का ध्यान करने लगे। ध्यान करते-करते उनकी आँख झपक गई। आँख लगते ही उन्होंने देखा कि सीता और तीनों भाइयों के साथ श्रीराम उनके सामने आ खड़े हुए हैं। तुलसीदास के आनन्द का कोई ठिकाना न रहा। वे आँखें फाड़ कर उनका दर्शन करते रहे। उनके मुँह से बोली नहीं निकलती थी, परन्तु उनका रोम-रोम अमृत-पान कर रहा था।

तुलसीदास का स्वप्न टूट गया। वह सोचने लग गए। बस, उसी दिन से तुलसीदास ताड़ के पत्तों पर अपनी भाषा में रामायण लिखने लग गए। रामायण जैसा महाकाव्य लिखने के लिए किसी पुण्य-स्थल की आवश्यकता थी। यह सोच कर तुलसीदास उस गाँव को छोड़ कर काशी चले गए।

काशी में बड़े बड़े पण्डित और ज्ञानी रहते थे। उन सबको तुलसी-रामायण की बात मालूम हुई। कुछ लोगों ने तुलसीदास की बड़ी प्रशंसा की—"सरल जन-भाषा में

रामायण लिख कर तुलसीदास जनता का बहुत उपकार कर रहे हैं।"

लेकिन कुछ लोगों ने शिकायत भी की—"रामायण तो धर्म-ग्रन्थ है। उसे तो संस्कृत में ही रहना चाहिए। ग्रामीण भाषा में लिखने पर तो यह अपवित्र हो जाएगी।" इस तरह कुछ ही दिनों में तुलसीदास का नाम देश में चारों ओर फैल गया।

एक दिन तुलसीदास अपने आश्रम में बैठ कर कुछ लिख रहे थे कि एक दुखिया औरत ने आकर उन्हें प्रणाम किया।

तुलसीदास ने बिना सिर उठाए ही आशीर्वाद दे दिया—"दीर्घ सुमंगली भव! पुत्र-पौत्राभिवृद्धिरस्तु!" इतना कह कर वे फिर लिखने में निमग्न हो गए।

लेकिन वह औरत यह आशीर्वाद सुन कर खुश होने के बदले और भी सिसक सिसक कर रोने लगी। तब चकित होकर तुलसीदास ने सिर उठाया और पूछा—"माँ! तुम क्यों रो रही हो!"

औरत ने बिलख कर कहा—"गोसाईं जी! आज सबेरे ही मेरे पति चल बसे। उनकी चिता रचाई जा रही है। मैं अपने पति की सहगामिनी होने जा रही हूँ। आप का आशीर्वाद लेने आई थी। लेकिन आपने ऐसा आशीर्वाद दिया है कि.........।"

यह सुन कर गोस्वामीजी सन्न रह गए। कुछ क्षण बाद उन्होंने कहा—"माई! नहीं जानता कि मेरे मुँह से यह आशीर्वाद क्यों निकला! जान पड़ता है, तुम्हारा सुहाग अभी समाप्त नहीं हुआ है। राम ने मेरे मुँह से जो बात निकाली है, वह झूठी तो हो नहीं सकती। यह तो उन्हीं की बात है। चलो, मैं उसे देखता हूँ। देखूँ, भगवान की इच्छा क्या है!" यह कह कर तुलसीदास जी उस सहगामिनी के साथ गङ्गा के किनारे जाए। चिता के पास बैठ कर उन्होंने राम

की प्रार्थना की—"भगवान ! जिसकी चरण-धूलि शिला को दिव्य नारी का रूप दे सकती है, उसकी कृपा क्या इस सती का सुहाग नहीं लौटा सकती ? मेरे मुँह से तुम्हीं तो बोले हो भगवन् ! फिर यह आशीर्वाद झूठा कैसे होगा ?" इतना कहते-कहते चिता हिली और वह मुर्दा मनुष्य इस तरह उठ बैठा जैसे अभी नींद से जग गया हो।

यह देख कर भीड़ भौचक रह गई। सती और सजीव पति दोनों तुलसीदास के चरणों पर पड़ गए। फिर सब लोग राम का भजन करते और तुलसीदास की जय मनाते गाजे-बाजे के साथ चले गए।

यह खबर बिजली की तरह चारों ओर फैल गई। बादशाह अकबर के कानों में भी यह बात पहुँची। उसने अपने दरबार में तुलसीदास की तारीफ की। लेकिन कुछ पण्डित लोग तुलसीदास से जलते थे। उन लोगों ने कहा—"राजन् ! ये सब झूठी बातें हैं। तुलसीदास का इसमें कोई बड़प्पन नहीं है। संस्कृत की रामायण को इन्होंने हिन्दी में लिख दिया है। विश्वास न हो तो जाँच करवा लें।"

यह सुन कर बादशाह ने तुलसीदास को दरबार में बुलवाया और कहा—"पण्डितजी ! मैंने सुना है कि आप काशी में बहुत चमत्कार दिखाते हैं। हमें भी कोई चमत्कार दिखाइए न ?"

तुलसीदास ने बड़ी नम्रता से कहा—"मैं क्या चमत्कार दिखाऊँ ? जो कुछ दिखाना होगा श्री रामचन्द्रजी दिखाएँगे।"

"अच्छा तो, हमें रामजी के दर्शन करा दीजिए। अगर न कराएँगे तो समझा जाएगा कि आप धोखेबाज हैं। इसकी सजा होगी बन्दी-खाना।" बादशाह ने धमकाना चाहा।

"राम-भजन के सिवा मैं और कोई चमत्कार नहीं जानता। आपकी जो इच्छा

दो कीजिए।" तुलसीदास ने सरल भाव से कहा।

"जाओ! इस ढोंगी को कैद में डाल दो। जब तक यह मुझे रामचन्द्र के दर्शन न कराएगा, इसे छुटकारा नहीं मिलेगा।" बादशाह ने सिपाहियों को हुक्म दिया। सिपाही गोसाईं जी को बंदी-खाने में डाल आए।

थोड़ी देर बाद वह बूढ़ा ब्रह्मचारी तुलसीदास के पास आया और बोला—"तुम राम-भजन करते रहो। बादशाह को मैं पाठ पढ़ाता हूँ।" यह कह कर बूढ़ा ब्रह्मचारी चला गया।

दूसरे दिन सवेरा होते ही राजधानी में खलबली मच गई। चारों ओर जहाँ देखो बंदर ही बंदर नज़र आने लगे। घरों के खपड़े उखेड़ दिए गए। पेड़ों के फल टूट गए। राहगीरों के नाक-कान नुच गए। घर-घर में घुस कर बन्दर ऊधम मचाने और सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट करने लग गए। बादशाह के रङ्ग-महल में भी बन्दर घुस आए। कुछ बन्दरों ने शाही पलङ्ग उठा लिया और ले जाकर बाहर पटक दिया।

बादशाह की कमर टूटते टूटते बची।

उसने तुरन्त मन्त्रियों को बुला भेजा। वे लोग मुँह लटकाए आए और हाथ जोड़ कर बोले—"जहाँपनाह! राम-भक्त तुलसीदास बंदी-खाने में हैं। मालूम होता है, यह सब उसी का फल है। बन्दर राम के भक्त कहे जाते हैं।"

यह सुन कर बादशाह घबराया हुआ तुलसीदास के पास पहुँचा। "महात्मा! मैं क्षमा चाहता हूँ! इन बन्दरों से हमारा पिण्ड छुड़ा दीजिए।" उसने गिड़गिड़ा कर कहा।

बेचारे तुलसीदास जी को क्या मालूम था कि बाहर क्या हो रहा है? वे तो राम-भजन

में मग्न थे। इसलिए उन्होंने कहा—"बन्दर! बन्दर कहाँ से आए दिल्लीश्वर!" बादशाह उन्हें बाहर ले गया। तुलसीदास को देखते ही वानरों की सेना सिर झुका कर खड़ी हो गई।

यह देख तुलसीदास ने पुलकित होकर कहा—"शाहंशाह! आप बड़े भाग्यशाली हैं। आपको रामचन्द्रजी के दर्शन अवश्य होंगे। ये बन्दर इसी बात की सूचना देने आए हैं। रामचन्द्र के यहाँ बन्दरों की सत्तर पल्टनें हैं। उनमें से एक यहाँ आई है। बाकी पल्टनें भी आ जाएँगी। उसके बाद भगवान आ जाएँगे।"

उनकी बातें सुन कर अकबर के पैरों के तले की जमीन खिसक गई। "वानरों की एक ही पल्टन ने तो इस सारे शहर को बरबाद कर दिया है। और जब पूरी पल्टनें आ जाएँगी, तो उसका क्या होगा!" यह सोच कर वह काँप कर बोला—"महात्मा! मैं रामचन्द्र के दर्शन नहीं चाहता। आप कृपा करके इन बन्दरों को यहाँ से हटा दीजिए।"

तुलसीदास हनुमानजी की प्रार्थना करने लगे। देखते-देखते बंदर जहाँ के तहाँ गायब हो गए।

उस दिन से बादशाह ने प्रतिज्ञा कर ली कि वह कभी साधु-सन्तों को कष्ट न देगा। उसने तुलसीदास के अनेक सत्कार करके उन्हें हिफाजत से काशी भेज दिया।

बहुत दिन बाद तुलसीदास ने अपनी रामायण पूरी की और अन्त में भगवान रामचन्द्र में लीन हो गए। उन्होंने देश के लिए जो सम्पदा छोड़ी उसके कारण उनका नाम अजर और अमर हो गया।

तीन जुआरी

शोभा दत्त

★

किसी गाँव में तीन जुआरी रहा करते थे। उनको जुआ खेलने के सिवा और कोई काम न था। एक दिन की बात थी कि तीनों जुआ खेल रहे थे। धीरे धीरे एक के पास सारा रुपया चुक गया। तब उसने बाकी दोनों के पास कर्ज करके जुआ खेला लेकिन वह रुपया भी हार बैठा। अब उसके पास कानी-कौड़ी भी न थी। तब उसके दोनों साथी उसे रुपए के लिए तङ्ग करने लगे। वह बेचारा बड़ी मुश्किल में पड़ गया। 'मरता क्या न करता!' आखिर उसने मुट्ठी भर धूल उठा कर अपने साथियों की आँखों में झोंक दी और इस गड़बड़ी में नौ-दो ग्यारह हो गया।

उसके साथी ठण्डे पानी से अपनी आँखें धोकर थोड़ी देर बाद अपने धोखेबाज दोस्त को खोजने निकले। वे मन ही मन उसे कोसते हुए कहते जा रहे थे कि बच्चू पकड़ा गया तो खूब खबर लेंगे। दोनों साथियों ने बड़ी देर तक उसको खोजा। गलियों, बाजारों में घूम-घूम कर आखिर वे बहुत थक गए। लेकिन उसका कहीं पता न चला। आखिर हैरान होकर वे एक अमराई में एक पेड़ की ठण्डी, घनी छाँह में जा बैठे। जब बैठे बैठे जी ऊब गया तो जुआ खेलने लगे। उनका साथी जिसकी खोज में ये बेचारे घूमते घूमते थक गए थे उसी पेड़ की एक डाली पर दुबका बैठा था। पहले तो अपने साथियों को देख कर उसकी जान में जान न रही। लेकिन जब उसने उन दोनों को जुआ खेलते देखा तो उसका सारा भय दूर हो गया। वह सब कुछ भूल कर जुए का खेल देखने लगा। वह इतना तन्मय हो गया कि उसे बीते की याद ही न रही। ज्यों-ज्यों खेल चलता गया त्यों-त्यों उसके मन का जोश बढ़ता गया। आखिर थोड़ी देर में वह अपने आप को भूल गया और यह कहते हुए नीचे कूद पड़ा—"ठहरो! ठहरो! मुझे भी एक दाव खेलने दो!" उसके साथियों ने उसे पकड़ लिया और खूब मरम्मत की। बच्चो! देखी तुमने जुए की महिमा!

बहुत दिन पहले एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम रामभट्ट था। उसके मन में तीर्थ करने और पवित्र नदियों में स्नान करने की बड़ी इच्छा थी। लेकिन वह बड़ा ही गरीब था। इसलिए उसकी इच्छा पूरी न हुई।

जब उस ब्राह्मण का अन्तकाल निकट आ गया, तो उसने अपने इकलौते लड़के श्यामभट्ट को बुला कर कहा—"बेटा! बहुत चाहने पर भी मैं अपनी जिन्दगी में न कोई तीर्थ ही कर सका और न पवित्र नदियों में स्नान ही कर सका। मेरी वह लालसा अपूर्ण ही रह गई। अगर हो सके तो तुम मेरी हड्डियों को पवित्र नदियों में विसर्जन कर देना। अगर सभी नदियों में न हो सके तो कम से कम गङ्गा में तो जरूर प्रवाहित कर देना। अगर तुम इतना कर दोगे तो मेरी आत्मा को शाँति मिल जाएगी।" इस प्रकार अंतिम इच्छा प्रगट करके रामभट्ट ने प्राण छोड़ दिए।

श्यामभट्ट को अपने पिता पर बड़ी श्रद्धा थी। उसने निश्चय कर लिया—"पैसे न हो सकेगा, तो कर्ज-वर्ज करके भी मैं अपने पिता की इच्छा पूरी करूँगा। उनका पुत्र होकर मैं इतना न कर सका, तो मेरा जन्म ही किस काम का!" चाहे जितना भी कष्ट उठाना पड़े, काशी जाकर गङ्गा जी में अस्थि-विसर्जन करने का संकल्प उसने कर लिया। लेकिन उन दिनों आज की तरह रेल और मोटरें तो थीं नहीं। यात्रा करना बहुत ही मुश्किल था। पैदल ही जाना पड़ता था। घोर जङ्गलों और ऊँचे पहाड़ों को पार करना

अनूप कुमार

पड़ता था। चोर-डाकुओं और जङ्गली जानवरों का डर लगा रहता था। जो लोग तीर्थ करने जाते थे वे अक्सर लौट कर न आते थे। इसलिए एक कहावत हो गई थी—'जो काशी जाता है, वह चिता पर चढ़ कर जाता है!'

श्यामभट्ट भी पैदल ही चला। राह में जो जो तीर्थ पड़ते दर्शन कर लेता। लेकिन उसका मन तो हमेशा पिता के ध्यान में लगा रहता था। इसलिए वह उनकी हड्डियों की पोटली को बड़ी सावधानी से लिए चल रहा था।

इस तरह चलते चलते वह कड़पा पहुँचा। वहाँ उसे पिनाकिनी नदी मिली। उसने सोचा—"पिनाकिनी में नहा तो लूँ!" हड्डियों की पोटली किनारे पर रख कर वह नदी में उतरा। नहा धोकर किनारे आया तो देखा कि नदी के पानी से पोटली भीग गई है। "अच्छा! धूप में सुखा लूँगा।" वह सोच कर उसने पोटली खोली।

लेकिन यह क्या! पोटली खोलते ही उसे अस्थियों के बदले दिव्य-सुगन्ध वाले विकसित, उजले फूल दिखाई पड़े। उसे बहुत अचरज हुआ। उसने सोचा—"अहा! पिनाकिनी की कैसी महिमा है! काशी के गङ्गा-जल की महिमा मैं सुनता ही आया हूं। लेकिन पिनाकिनी की महिमा तो आँखों के सामने है। अब काशी जाने की क्या जरूरत रही! मेरे पिता को यहीं मुक्ति मिल जाएगी। मेरा कर्तव्य यहीं पूरा हो जाएगा। आज मेरा जीवन सफल है।" यह सोच

कर उसने अत्यन्त आनन्द से अस्थि-विसर्जन कर दिया और घर लौट चला।

जिस जगह श्यामभट्ट ने स्नान किया था वहाँ एक घाट बन गया। आस-पास के गाँवों की औरतें वहाँ नहाने और पानी भरने लगीं। गाय-गोरू भी वहाँ आकर पानी पिया करते।

एक दिन एक बूढ़ा चरवाहा अपने ढोरों को पानी पिलाने वहाँ आया। उसकी गाएँ बड़ी दुबली-पतली थीं। लेकिन उस घाट का पानी पीते ही वे मोटी-ताजी बन गईं। यह देख कर उस बूढ़े को बड़ा अचरज हुआ। वह भी वहीं नहाने लगा। नहा-धोकर जब ऊपर आया तो वह भी मोटा-ताजा बन गया। उसका बुढ़ापा जाने कहाँ भाग गया। संयोग से उसी समय उस चरवाहे की औरत पानी भरने आ रही थी। चरवाहे ने हँस कर उसकी ओर देखा।

औरत ने समझा कि कोई शोहदा है। वह गाली-गलौज करने लगी। चरवाहे ने उसे बहुत समझाया-बुझाया कि "मैं तुम्हारा पति हूँ। पिनाकिनी नदी में स्नान करके अब जवान बन गया हूँ।" लेकिन उसने कुछ नहीं सुना। तब चरवाहे ने उसे जबर्दस्ती खींच कर पानी में ढकेल दिया।

बस, देखते ही देखते वह बदसूरत बूढ़ी एक सुन्दरी बन गई। जब चरवाहा अपनी स्त्री के साथ घर आया तो उसके बाल-बच्चे और अड़ोसी-पड़ोसी दोनों को बिल्कुल न पहचान सके।

धीरे-धीरे जब यह समाचार चारों ओर

फैला तो बिना किसी के बताए यह भेद लोगों पर प्रगट हो गया और उस दिन से सब लोग उस घाट पर स्नान करने लगे। वे देवताओं की तरह अमर बनने लगे।

कुछ दिन बाद यह बात तीनों लोकों में घूमने वाले नारद मुनि को मालूम हुई। नारद को तो लोग खूब जानते हैं। वे किसी की भलाई नहीं देख सकते। इतने लोगों को अमर होते वे कैसे देख सकते थे! इसलिए वे सोचने लगे कि कैसे इसमें विघ्न डाला जाए।

आखिर एक दिन उन्होंने ब्रह्माजी के पास जाकर सब हाल कह सुनाया। ब्रह्मा ने ध्यान लगा कर देखा कि इस घाट को ऐसी महिमा कहाँ से मिली! उन्हें पता लगा कि अपनी माँ की गुलामी छुड़ाने के लिए गरुड़ अमृत की हँड़िया चुरा लाए थे। इसलिए देवताओं के राजा इन्द्र से गरुड़ की लड़ाई हुई। उस हलचल में अमृत की एक बूँद पिनाकिनी के इस घाट पर गिर पड़ी। इसी से उस घाट को यह अद्भुत महिमा प्राप्त हो गई।

नारद के कहने से ब्रह्मा भी सोचने लगे कि अमरत्व का यह फल लोगों को नहीं मिलना चाहिए। इसलिए उन्होंने हनुमान जी को बुला कर कहा—"हनुमान! एक पहाड़ उठा कर पिनाकिनी के उस घाट में डाल दो।"

तुरन्त हनुमान जी उठे और एक पहाड़ लाकर उस घाट में डाल दिया। लेकिन पिनाकिनी का प्रभाव ऐसा था कि वह पहाड़ पानी पर कागज की तरह तैरने लगा।

यह देख कर ब्रह्मा जी घबरा गए। आखिर जब उन्हें कुछ नहीं सूझा तो वे नारद को साथ लेकर शिवजी के पास गए।

लेकिन शिवजी को भी कोई उपाय न सूझा। तब तीनों वहाँ से सीधे भगवान विष्णु के पास वैकुण्ठ पहुँचे और उनसे सारा हाल कह सुनाया।

तब भगवान ने मुसकुराते हुए कहा— "मुझ पर और ब्रह्मा जी पर हमेशा ऐसी ही आफतें आया करती हैं। तिस पर नारद कभी चुप नहीं रहते।" फिर धीरज देकर भगवान ने दोनों को विदा किया।

इसके बाद भगवान महादेव जी के साथ मनुष्य-रूप धर कर भूलोक में आए। दोनों ने उस जल में तैरते हुए पहाड़ को दोनों ओर से पकड़ कर दबा दिया। उनके प्रभाव से पहाड़ जमीन में बैठ गया और वह घाट मनुष्यों के लिए दुर्लभ हो गया। पिनाकिनी के जल ने रामभट्ट की हड्डियों को फूलों में बदल दिया था। उस पानी में हनुमान जी ने पहाड़ लाकर गिरा दिया था। इन दोनों के कारण उस जगह का नाम 'पुष्प-गिरि' पड़ गया। भगवान विष्णु और महादेव ने उस पहाड़ को दोनों ओर से पकड़ कर दबा दिया था। इसलिए पहाड़ के दोनों ओर उन दोनों के मंदिर बन गए, जो आज भी वहाँ हैं। उस जगह आज भी हर साल बड़े उत्सव होते हैं। लाखों आदमी भगवान के दर्शन के लिए आते हैं। उस जगह की महिमा ऐसी है कि पुष्प-गिरि के स्वामीजी ने वहाँ अपना मठ भी बना लिया है। पुष्प-गिरि कडपा से दस मील की दूरी पर है। बच्चो! अगर तुम उधर जाओ तो जरूर वह तीर्थ देख आना!

किसी समय गैंडे और जिराफ़ में बड़ी दोस्ती थी। एक दिन वे दोनों मैदान में चर रहे थे कि गैंडे ने कहा—"दोस्त! हम दोनों बहुत नाटे हैं। इसलिए हमें यह घास जो सभी जानवरों के पैरों से रौंदी गई है, खानी पड़ रही है। अगर हमारे लम्बी गर्दनें होतीं तो हम कितने चैन से पेड़ों की हरी हरी मुलायम पत्तियाँ खाते-फिरते!"

"लेकिन भगवान ने हमें लम्बी गर्दन दी ही नहीं; फिर अब सोच करने से क्या फ़ायदा है!" जिराफ़ ने जवाब दिया जैसे उसका लम्बी गर्दन से कोई मतलब ही नहीं हो।

तब गैंडे ने थोड़ी देर तक सोच-विचार कर कहा—"दोस्त! मुझे एक सुन्दर उपाय सूझ गया है। सुनो, मनुष्य है न! वह अपने बुद्धि-बल से ईश्वर को भी चुनौती दे सकता है। संसार में बुद्धि-बल से बढ़ कर कोई बल नहीं। इसलिए चलो उसके पास, वह कोई न कोई सूरत निकाल ही लेगा।"

यह सोच कर दोनों मिल कर मनुष्य के पास गए और अपनी इच्छा उसे कह सुनाई।

मनुष्य ने उनकी बातें सुन कर उनकी सहायता करना मंजूर कर लिया। उसने कहा—"तुम दोनों फलाना रोज़ साढ़े तीन बजे फलानी जगह आओ। मैं तुम्हारे मन की इच्छा पूरी कर दूँगा। लेकिन सुनो, तुम लोगों को समय पर वहाँ पहुँच जाना पड़ेगा। अगर देर हुई तो उसमें मेरा दोष नहीं। फिर मैं कुछ नहीं कर सकूँगा।" उसने साफ़ साफ़ बता दिया।

"इसमें क्या है! हम लोग ज़रूर समय पर पहुँच जाएँगे।" दोनों ने कहा। उस

दिन नियत समय पर जिराफ़ी उस जगह पहुँच गया।

मनुष्य वहीं बैठा मन्त्र जप रहा था। जिराफ़ी को देख कर वह उठ आया। "दोनों आ गए?" उसने पूछा।

"नहीं, गैंडा पीछे आ रहा है। उसने मुझे आगे आगे जाने को कहा।" जिराफ़ी ने जवाब दिया।

तब मनुष्य ने झुँझलाते हुए कहा—"अच्छा, तुम आओ! समय बीता जा रहा है! आओ! अपना मुँह खोलो!"

जब जिराफ़ी ने मुँह खोला तो उसने एक जड़ी अन्दर डाल दी और एक मन्त्र पढ़ कर कमण्डल का जल छिड़क दिया। ज्यों ही कमण्डल का जल देह के अन्दर पहुँचा कि जिराफ़ी की टाँगें और गर्दन बढ़ने लगीं।

तब जिराफ़ी ने मनुष्य को धन्यवाद दिया और कहा—"मेरे दोस्त के बारे में क्या कीजिएगा?"

"जो समय पर नहीं आते उनकी यही हालत होती है। गैंडे के लिए जो जड़ी रखी थी वह भी तुम्हीं खा लो। इससे तुम्हें और भी फायदा होगा।" यह कह कर मनुष्य ने गैंडे के लिए जो जड़ी रख छोड़ी थी वह भी जिराफ़ी को खिला दी और उसे भेज दिया।

जिराफ़ी अपने नए रूप में जङ्गल में गया और घास चरने के बदले चैन से घूम-फिर कर पेड़ों के हरे-हरे, ताजे, मुलायम पत्ते खाने लगा।

एक दिन जब गैंडे ने उसे देखा तो उसने जिराफ़ी से सारा हाल पूछा और कहा—"मान लो कि मुझसे थोड़ी देर हो ही गई! तो क्या मेरे लिए जरा ठहर नहीं सकता था वह? मैंने मनुष्य को इतना दुष्ट नहीं समझा था! देख लेना, अब उसकी क्या गत बनाता हूँ!" उस दिन से गैंडे ने मूर्खता-वश मनुष्य से दुश्मनी ठान ली। जिराफ़ी ने मनुष्य से दोस्ती की। इसलिए उसकी गर्दन लम्बी हो गई।

चन्दामामा पहेली

संकेत

बायें से दायें :

१. मृत्यु-हीन
४. एक फूल
७. धैर्य
८. ब्याह
९. युद्ध
१०. द्वार
११. नजदीक
१३. अभिरुचि
१५. अग
१७. युद्ध
१८. मुलम्मा
१९. पैर

ऊपर से नीचे :

१. व्याकुल
२. मौत
३. भूल
४. शायर
५. धीव
६. तरंग
११. आग
१२. आसान
१३. एक तरह का पेड़
१४. चुनना
१६. एक महीना
१७. सत्य

गुरु की पूजा

माँ-बाप के बाद बच्चे के जीवन में गुरु का स्थान आता है। माँ-बाप अगर बच्चे को शरीर देते हैं तो गुरु उसको ज्ञान देता है। वास्तव में बच्चे के बड़े होने के बाद सुखपूर्वक जीवन बिताने के लिए जिन गुणों की जरूरत होती है वे सब गुरु की सीख से ही उसको मिलते हैं। इसलिए गुरु की सेवा-शुश्रूषा करना बच्चों का धर्म है। गुरु चेलों को अपनी संतान की तरह मानता है। वह बिना किसी भी दुराव के विद्या-धर्म सिखाता है। जब उसे अपने छात्रों के प्रति प्रेम होता है तो वह उन्हें अपने ही समान या अपने से भी बड़ा बनाने की कोशिश करता है। ऐसे ही चेलों के बारे में कहावत है—'गुरु गुड़ तो चेला चीनी।' गुरु और चेले का नाता बहुत पवित्र है। पुराने जमाने में गुरु आश्रम बना कर हजारों चेलों को शिक्षा देते थे। इन्हीं विद्यालयों को गुरुकुल कहा करते थे। गुरुकुलों में अनुशासन का बहुत कड़ाई से पालन होता था। छात्र लोग बहुत नियम और निष्ठापूर्वक रहते थे। वे अपने गुरुओं को देवता समान मानते थे। शिक्षा पूरी हो जाने के बाद गुरु का आशीर्वाद पाकर छात्र गुरुकुल छोड़ देता और संसार में प्रवेश करके नाम कमाता। पुराने जमाने में हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली बहुत ही उत्तम होती थी। इसी से उन गुरुकुलों में पढ़ने वाले छात्र बड़े विद्वान और गुणवान होते थे।

तुम्हारी दीदी

करके देखो

एक काँच के गिलास में पानी भर लो। फिर उस गिलास में डूबने लायक एक सोख्ते कागज का टुकड़ा ले लो। उस टुकड़े को पानी पर डाल दो। तुरंत वह पानी को सोख कर तैरने लगेगा। तब एक पिन लेकर उस कागज के टुकड़े पर डाल दो। फिर और एक पिन लेकर उस सोख्ते के टुकड़े को पानी में दबा कर छोड़ दो। धीरे-धीरे कागज का टुकड़ा पानी में डूब जाएगा। लेकिन पिन वैसे ही पानी पर तैरता रहेगा।

* * *

एक सफेद कार्ड लेकर उसमें से एक गोल टुकड़ा कतर लो। उसके एक ओर स्याही पोत कर काला बना लो। उस गोल टुकड़े के बीचों-बीच पिन से एक महीन छेद कर दो। फिर उस कार्ड की काली तरफ अपनी आँख के पास रख लो। फिर किसी किताब का एक पृष्ठ निकाल कर उस गोल टुकड़े से एक अंगुल की दूरी पर रख कर छेद में से पढ़ो। अक्षर तुम्हें कई गुने बड़े दिखाई देंगे।

* * *

एक महीन कागज लेकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर डालो। फिर एक प्लास्टिक की कंघी निकालो। उस कंघी को एक रेशमी कपड़े पर खूब रगड़ो जिससे कि वह गरम हो जाए। अब तुम उस कंघी को उन कागज के टुकड़ों के पास ले जाओगे तो वे टुकड़े आकर उससे चिपक जाएँगे जैसे चुम्बक से लोहा।

* * *

चन्दामामा पहेली का जवाब:

अ	म	र		क	म	ल
धी	र	ज		वि	वा	ह
र	ण				द	र
ग	स				चा	व
वा	ह	म		स	म	र
क	ल	ई		च	र	ण

खाली डिब्बिए में चाकलेट

बाजीगर टिन के बने हुए एक डिबिए का ढकना खोल कर दर्शकों के नजदीक ले जाकर दिखाएगा। दर्शक जब उसमें देखेंगे तो उन्हें कुछ नहीं दिखाई पड़ेगा। इस तरह दर्शकों को दिखाने के बाद बाजीगर उस डिबिए को मेज पर रख देगा। फिर वह किसी से एक रूमाल माँग लेगा और उस रूमाल से उस डिबिए को ढँक कर जादू की लकड़ी उस पर दो तीन बार घुमा कर छुला देगा। फिर जब वह रूमाल हटा कर ढकना खोल कर दिखाएगा तो उस डिबिए में चाकलेट-पेप्परमिंट होंगे। वह उन्हें दर्शकों को दिखा कर लड़कों को बाँट देगा। लड़के उन्हें खुशी खुशी खाते जाएँगे और यह खबर चारों ओर फैला देंगे। प्रचार के लिए यह एक बहुत अच्छा उपाय है। कुछ बाजीगर डिबिए पर चावल के दाने छिड़क कर अन्दर से मुरही वगैरह बनाते हैं। मैंने भी बहुत बार डिबिए पर फूल बिखेर कर अन्दर से फूलों की माला निकाली है और किसी उपस्थित सज्जन के गले में डाल दी है। इस तरह का तमाशा टी-पार्टियों में करने से बड़ा मजा आता है। अब सुनो, मैं इस तमाशे का रहस्य बता देता हूँ। यह तमाशा हमारे बनवाए हुए डिब्बे पर निर्भर है। पहले चित्र की तरह दोनों तरफ खुली हुई एक नली सी बनवा लो। फिर दूसरे चित्र की तरह दोनों तरफ ढकने लगा हुआ दो तलों वाला एक डिबिया बना लो। यह डिबिया ऐसा हो कि

१-ला चित्र २-रा चित्र

३-रा चित्र ४-था चित्र

पहले चित्र में दिखाई हुई नली में लगा जाए। न ज्यादा सुस्त हो, न ज्यादा ढीला, जिससे उसे इधर उधर हटाने की गुंजाइश रहे। दूसरे चित्र के अनुसार बनाए हुए डिबिए में दो तल्ले हों। एक तल्ला बड़ा हो, दूसरा छोटा। छोटे तल्ले में चाकलेट, पेप्परमिंट वगैरह भर कर ढक्कन बंद कर दो। (चाकलेट वगैरह इतने कूट कूट कर भरे जाएँ कि डिबिया के हिलने-डुलने पर भी कोई आवाज न हो।) अब इस डिबिए को पहले बताई हुई नली में घुसा दो। इस तरह पहले से तैयार होकर तमाशा करने आओ। तीसरा चित्र देखो। जब तुम डिबिया दर्शकों को दिखाओगे तो उसे इसे तरह पकड़ोगे कि उसका खाली तल्ला दर्शकों की तरफ हो। वे उसे देख कर समझेंगे कि डिबिया खाली है। उन्हें अच्छी तरह हिला-डुला कर देख लेने दो; कोई हर्ज नहीं है। डिबिए को टेबुल पर रखते वक्त तुम्हें एक तमाशा करना होगा। डिबिए का खाली तल्ला वाला सिरा नीचे कर देना होगा। इससे चाकलेट वाला तल्ला ऊपर आ जाएगा। चौथा चित्र देखो। इसके बाद दर्शकों से एक रूमाल लेकर डिबिए को ढँक दो। अपनी जादू की लकड़ी उस पर तीन बार घुमा कर छुला दो। फिर रूमाल हटा लो और ढकना खोल कर उसमें के चाकलेट और पिप्परमेंट बाँट दो!
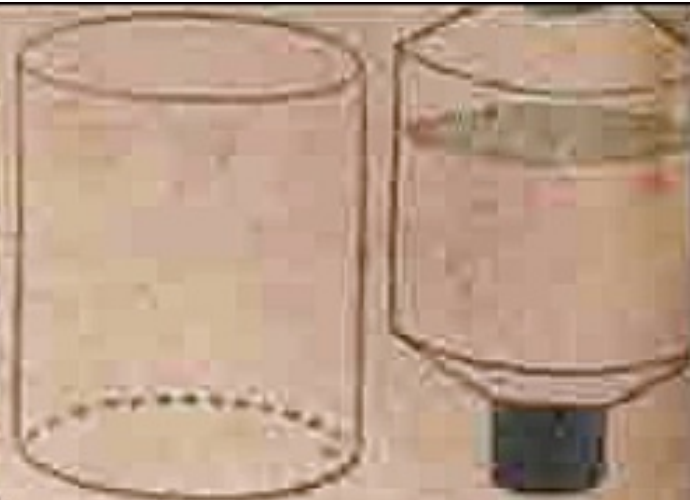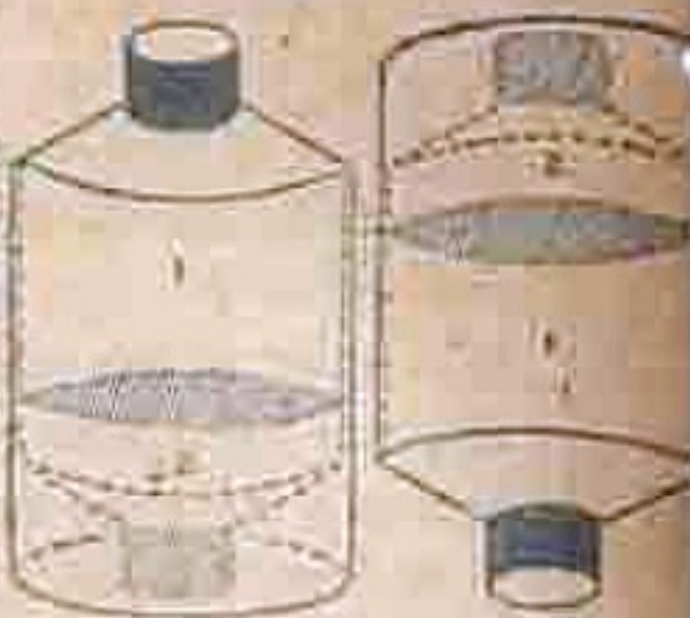
जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मैजीशियन
१२/३ ए, जमीर लेन, बालीगंज,
कलकत्ता-१९.

रङ्ग भरो—१-ले चित्र की कहानी

विलासपुर नगर पर मणिशङ्कर नाम के राजा राज करते थे। उन्हें खेल-तमाशे बहुत पसंद थे। जादूगरी और बाजीगरी का उन्हें बड़ा शौक था। उन्होंने देश-विदेश से नामी जादूगरों को बुलवाया और उनका जादू देख कर आनन्द उठाया। एक बार मलबार देश से एक मशहूर जादूगर उनके राज्य में आया। कहा जाता था कि वह जादूगर संसार के सब जादूगरों में बड़ा है। राजा ने उससे प्रार्थना की कि वह उन्हीं के राज में रह जाए। जादूगर भी उनकी बात मान कर वहीं रहने लगा।

महाराज के एक बड़ी ही सुगुणवती और सुंदरी लड़की थी। जब दरबार में जादूगर कभी-कभी जादू करता तो तमाशा देखने के लिए राजकुमारी भी आती और परदे की आड़ से तमाशा देख कर खुश होती। एक बार इसी तरह जादूगर ने राजकुमारी को देख लिया और उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। उसके मन में हुआ कि उससे ब्याह कर ले। लेकिन राजा क्योंकर राजी हो? इसलिए जादूगर ने सोचा कि पहले राजकुमारी को राजी कर लें। पीछे राजा भी मान लेगा। उसने राजकुमारी को अपनी इच्छा बताई। लेकिन राजकुमारी ने इनकार कर दिया। फिर भी जादूगर ने अपना हठ न छोड़ा। एक दिन जब राजकुमारी सो रही थी तो जादूगर तोते का रूप धर कर खिड़की में से उसके कमरे में घुसा। घुस कर उसने जादू के बल से राजकुमारी को भी एक तोता बना लिया। फिर वह चुपके अपने घर की तरफ चला। इतने में नौकरों ने उसे देख लिया। उन्होंने तुरंत राजकुमारी के कमरे में जाकर देखा तो वहाँ एक तोते के सिवा और कोई न था। जब यह बात उन्होंने राजा से जाकर कही तो राजा ने बिना सोचे-विचारे जादूगर का सिर उतारने का हुक्म दिया। लेकिन जादूगर के मरने के बाद राजा बड़ी चिंता में पड़ गया। क्योंकि राजकुमारी तो तोते के रूप में थी। वह फिर अपना रूप कैसे पा सकेगी? जादूगर तो मर गया।

जादूगर की सब किताबें उसके कमरे में ही थीं। राजा ने सोचा कि तोते को फिर आदमी बनाने का उपाय उनमें कहीं न कहीं लिखा होगा। इसलिए उसने एक विद्वान को भेजा। विद्वान तुरंत जाकर किताबें पलट कर देखने लगा कि तोता फिर आदमी कैसे बन सकता है? यही जून महीने के चित्र की कहानी है।

रङ्ग भरो (कहानी) : चित्र २

Controlling Editor : SRI CHAKRAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI, at the B. N. K. Press, Madras - 1

Chandamama, August '51

Photo by A. L. Syed

शिकारी कुत्ते